वह भी प्रभावित होता है। जो मनाली से लेह सड़क जाती है वह बार्डर रोड आर्गेनाइज़ेशन के पास है लेकिन बार्डर रोड आर्गेनाइज़ेशन को पास भी धन का अभाव है। वह सड़क को प्रोपरली मेनटेन नहीं कर पा रहे है। जनजातिय क्षेत्र की जो बैमौसम सब्जियां है, आज लगभग 70-80 ट्रक मटर से लदे हुए फंसे पड़े हैं, देश की सुरक्षा के लिए यह सड़क आवश्यक है, जितनी भी आर्मी की सप्लाई जाती है उसके लिए यह शार्टेस्ट रूट है। आज वह सड़क अवरुद्ध हो जाने से आर्मी की सप्लाई में बाधा उत्पन्न हुई है। मंत्री महोदय, अब आ गये है। मैं पुनः निवेदन करना चाहूंगा कि राष्ट्रीय उच्च मार्ग कुल्लु के लिए और जो बार्डर रोड जाता है मनाली से लेह लद्दाख के लिए उसकी तरफ विशेष ध्यान दें ताकि जल्दी से जल्दी वह ठीक हो सके। न केवल राष्ट्रीय उच्च मार्ग बल्कि जो ग्रामीण सड़कें है वह भी बुरी तरह से प्रभावित हुई हैं। महोदय, हमें उम्मीद थी कि सेंट्रल रोड फंड के बारे में जो एक प्रस्ताव सर्वसम्मति से दोनों सदनों में वर्षों पहले पारित किया गया, उस पर सरकार कोई न कोई कारगुज़ारी करेगी। मैंने इस पर आधे घंटे की चर्चा भी उठाई थी। उस चर्चा में भाग लेते हुए मंत्री जी ने यह आश्वासन दिया था कि जैसे ही मंत्रिमंडल की उपसमिति की रिपोर्ट आ जाएगी सेंट्रल रोड फंड में वृद्धि के बारे में जो प्रस्ताव पारित किया गया है, उस पर कार्यवाही की जाएगी। लेकिन खेद का विषय है कि जब मैंने इस बार यह प्रश्न पूछा तो मंत्री महोदय ने स्वयं पहले जवाब दे दिया कि वह उपसमिति अब है ही नहीं, तोड़ दी गई है। मैं आपके माध्यम से मंत्री जी से जानना चाहूंगा कि आखिर सेंट्रल रोड्ज़ के बारे में जो प्रस्ताव दोनों सदनों ने सर्वसम्मति पारित कर दिया था, उसका क्या होगा? उसका क्या होगा, क्योंकि अब तो कोई उपसमिति भी नहीं रही जो कि उसके ऊपर विचार कर रही हो। इसलिए मैं निवेदन करना चाहूंगा कि दोनों सदनों द्वारा जो सैन्ट्रल रोड फंड के बारे में प्रस्ताव पारित हुआ है उसको कार्यान्वित करें ताकि सभी प्रांतों को उनका हिस्सा मिल सके और ऐसी सड़कों को वह मेंटेन कर सकें। धन्यवाद।

उपसभाध्यक्ष, महोदय, मैं चाहूंगा कि मंत्री जी भी कुछ कहें, क्योंकि वह कहना चाहते हैं।

THE MINISTER OF SURFACE TRANSPORT (SHRI T.G. VENKATRAMAN): The hon. Member has asked about the resolution. The Cabinet had taken it up several times. It is being postponed because they say that it is connected with petrol hike. I have not disposed it of. As soon as that is decided, they are going to allocate money for this. That is the promise that has been given to me. That assurance has been given. I am waiting.

PROF. VIJAY KUMAR MALHOTRA (Delhi): Are you going to hike petrol prices?

SHRI T.G. VENKATRAMAN: They say that it is interconnected. The assurance has been given. It is interconnected with the hike. At that point of time, it will be done.

श्री महेश्वर सिंह: महोदय, वह हाइक तो जब होगी तब होगी, लेकिन जब यह सैन्ट्रल रोड फंड तय हुआ था उसके बाद तो अनेकों बार हाइक हो चुकी है। उसके....**(व्यवधान)** जो सैन्ट्रल रोड फंड में पैसा है वह तो दीजिए।...**(व्यवधान)**

उपसभाध्यक्ष, (श्री सनातन बिसि): मंत्री जी ने वह तो बोल दिया। श्री मलकानी जी

RE. PROPOSAL TO DEMOLISH INDIA GATE CANOPY

SHRI K.R. MALKANI (DELHI): Mr. Vice-Chairman, I rise to raise the issue of the canopy at India Gate. Originally, the statue of King George V used to adorn that canopy. More than 40 years ago, a patriotic young man went to India Gate, he took a ladder with him, waded through water and hammered away the poor nose of King George V. Until then the Government did not have the sense to politely, courteously and with dignity remove that statue. This work was done by a patriotic young man. But to this day the Government has not been able to decide as to what to do with that canopy and whose statue should be put up there.

I am reminded of Indonesia. In front of the Merdeka Palace, the President's Palace in Jakarta, there was a large space and one of the first things that President Sukarno did was to put up a huge statue of Sri Ram with bow and arrow, pulling at the string. More than 90 per cent of

Indonesia's population consists of Muslims. But they look upon Sri Rama as a great hero. I will not suggest that we should put up statues of Sri Rama or krishna or Shivaji or Rana Pratap or Guru Gobind Singh or Swami Vivekananda here because in the thinking of our pseudo secular friends this would amount to being "communal". But I am shocked to find that this secular Government has not been able to instal even the statue of Mahatma Gandhi under the canopy.

The arguments for not doing so are two. They say that the canopy is royal. Canopy is a canopy. *Chattri* is a *Chattri*. What is royal about it? There was a time before independence when canopies as well as monuments, including the Parliament House, the Rashtrapati Bhavan, all were topped with a crown. This crown was removed after independence and replaced by the lion capital symbol. So, there is no question of this canopy beign 'royal'. In any case, as far as possible, even statue should have a protective *Chhatri* and even a protective pool of water or grill.

There are other people who say that Bapu was a poor man's representative, how can he be put up under a ground canopy? This is not convincing. They say, if Gandhiji's statue is installed there, the canopy should be removed. Nobody should tamper with the canopy or any other piece of art and architecture. It was beautifully put up by Lutyens, a great man and we salute him. He planned and built new Delhi. He was a great architect and nobody should tamper with the canopy. It would be appropriate if Mahatma Gandhi's statue is installed there without further delay. In our childhood days, we used to sing in the *prabhat pheris*.

3.00 P.M.

"भारत का सरताज हमारा एक लंगोटी वाला है"

We are in a position to install that noble *Langotiwala* in that royal place. Why should we hesitate? I would earnestly urge upon the Government to announce that a statue of Mahatma Gandhi will be installed under the *Chatri* in that particular place and I would beg of them that this announcement should come before the 15th of August, 1997. Thank you very much.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANATAN BISI): Now we will take up the Special Mentions.

SPECIAL MENTIONS

Pitiable Condition of Khadi Gramodyog

श्री रामदास अग्रवाल (राजस्थान): उपसभाध्यक्ष जी, मैं सदन के माध्यम से खादी ग्रामोद्योग की जो वर्तमान स्थिति है, उस का कुछ चित्रण आप के सामने प्रस्तुत करना चाहता हूं।

महोदय, जैसा कि हम जानते हैं खादी ग्रामोद्योग केवल ग्रामों में रोजगार उपलब्ध कराने वाला उद्योग नहीं है। इस के पीछे कुछ ऐतिहासिक भूमिका है, उस के पीछे कुछ संस्कार है, इस के पीछे कुछ सांस्कृतिक भावना है। महात्मा गांधी जी ने खादी ग्रामोद्योग को एक प्रकार से ग्रामीण लोगों के स्तर को उठाने के साथ-साथ भारतीयता की भावना, स्वदेशी की भावना और उन के अंदर स्वतंत्रता की भावना जाग्रत करने के उद्देश्य से खादी का कार्य आरंभ किया था और आज इस खादी ग्रामोद्योग ने लगभग 61 लाख लोगों को रोजगार दिया हुआ है जोकि "नो प्राफिट, नो लास" के बेसिस पर काम करता है। महोदय, खादी खादी के ग्रामोद्योग के लिए एक बहुत आवश्यक वस्तु बन गयी है उन ग्रामीणों के जीवन रोजगार चलाने के लिए लेकिन पिछले कुछ वर्षों से ऐसा अनुभव किया जा रहा है कि जब से उदारीकरण की नीति आई है, जब से ग्लोबलाइजेशन हुआ है तब से मुझे ऐसा लगने लगा है कि खादी ग्रामोद्योग भी इस उदारीकरण की नीति का शिकार हो गया है।

महोदय, अत्यंत आश्चर्य की बात है कि आज हम बड़े गौरव और शान से देश की आजादी की स्वर्ण जयंती मनाने जा रहे हैं, लेकिन हमारे महान नेताओं ने जिन भावनाओं को पनपाने के लिए, भारत की आजादी की भावनाओं को पनपाने के लिए जीवन के बलिदान और जीवन को उत्सर्ग करने के लिए हमें प्रेरणा दी, उन तत्वों को हम भुला देना चाहते हैं और उन बातों को